IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"वैदिक संस्कार पद्धति में निहित सामाजिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता"

***हस्तु रानी, **डॉ. मीनाक्षी मिश्रा**

शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, 334004, राजस्थान, भारत

शोध निर्देशक, शिक्षा शास्त्र, भारती शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान, श्रीगंगानगर, 335001, महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर, 334004, राजस्थान, भारत

शोध सारांश : प्राचीन भारतीय शिक्षा का आविर्भाव वेदों से माना जाता है, जो आज भी भारतीयों के जीवन दर्शन में विभिन्न रीतियों, प्रथाओं, संस्कारों और परम्पराओं के रूप में विद्यमान है। वैदिक संस्कार भारतीय जीवन दर्शन के स्त्रोत है। शास्त्रों के अनुसार मनुष्य जीवन के लिए कुछ अपेक्षित नियम बनाये गये है, यह नियम ही संस्कार है। यह संस्कार व्यक्ति के जन्म के पूर्व से आरम्भ हो कर उसकी मृत्यु उपरान्त चलते रहते है। इन संस्कारों में सांसारिक, व्यावहारिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों से संबंधित आवश्यक ज्ञान का संग्रह है। इनके माध्यम से सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन और सभ्यता के विभिन्न पहलुओं का सजीव चित्रण किया जाता है। यह संस्कार भारतीय शिक्षा के स्त्रोत है। समाज के सामाजिक तथ्यों, घटनाओं, विचारों, अनुभवों, क्रियाओं एंव प्रक्रियाओं का ज्ञान भी सामाजिक मूल्यों के आधार पर ही होता है। यह अध्ययन संस्कार कार्यक्रमों द्वारा सामाजिक मूल्यों के विकास को समझने हेतु किया गया है। शोध कार्य में ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। इस शोध में पाया गया कि संस्कार आयोजनों में भाग लेने से व्यक्ति में प्रेम, सहयोग, सहानुभूति, सहायता और आदान–प्रदान आदि सामाजिक गुणों का विकास होता है। संस्कार अनुष्ठानों द्वारा व्यक्ति, परिवार और समाज को प्रशिक्षित किया जाता है।

मुख्य शब्द : वेद, संस्कार, अन्तगर्भ संस्कार, सामाजिक मूल्य।

प्रस्तावना

वैदिक समाज में शिक्षा का सदैव प्रमुख स्थान रहा हैं, जिसमें मानव को लौकिक और पारलौकिक जीवन के लिए अनेक प्रकार की शिक्षाएं दी जाती थी। वेद विश्व का प्राचीन साहित्य हैं। वेद शब्द का उद्भव 'विद्' धातु से हुआ हैं, जिसका अर्थ 'जानना' या 'ज्ञान' हैं। वेदों का ज्ञान भारतीयों के जीवन का अभिन्न अंग है, जो आज भी भारतीयों के जीवन दर्शन में विभिन्न रीतियों, प्रथाओं, संस्कारों और परम्पराओं के रूप में विद्यमान हैं। वैदिक संस्कार भारतीय जीवन दर्शन के स्त्रोत हैं। वामन शिवराम आप्टे के अनुसार संस्कार का अर्थ पूर्ण करना, सुसंस्कृत करना, तैयार करना, श्रृंगार करना, सजावट करना और अलंकृत करना हैं।[1] अतः शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से निरन्तर परिष्कार अथवा शुद्ध करना ही संस्कार हैं।

ड़ॉ. राजबली पाण्डेय वैदिक संस्कार पद्धति की व्याख्या करते हुए लिखते हैं, "हिन्दू संस्कारों में अनेक आरम्भिक विचार, धार्मिक विधि–विधान, उनके सहवर्ती नियम तथा अनुष्ठान व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का परिष्कार, शुद्धि और पूर्णता का कार्य करते हैं।" संस्कार व्यक्ति के जन्म के पूर्व से आरम्भ हो कर उसकी मृत्यु उपरान्त चलते रहते हैं। इन संस्कारों में सांसारिक, व्यावहारिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों से संबंधित आवश्यक ज्ञान का संग्रह हैं। इनके माध्यम से सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन और सभ्यता के विभिन्न पन्नों का सजीव चित्रण किया जाता हैं। यह संस्कार भारतीय शिक्षा के स्त्रोत हैं।

इन संस्कारों को चार प्रमुख श्रेणियों में बांटा जा सकता हैं –

जन्मपूर्व संस्कार (अन्तगर्भ संस्कार)

इनके अन्तर्गत गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्तोन्नयन संस्कार आते हैं। गर्भाधान से पूर्व ही गर्भ संस्कार की शुरूआत हो जाती हैं। गर्भिणी की दैनिक दिनचर्या, समयानुसार आहार, प्राणायाम, ध्यान, गर्भस्थ शिशु की देखभाल आदि का वर्णन गर्भ संस्कार में किया जाता हैं। गृहस्थ जीवन में प्रवेश के उपरान्त प्रथम कर्त्तव्य के रूप में गर्भाधान संस्कार को मान्यता दी गई हैं। गर्भिणी माता को प्रथम तीन महीने में पुंसवन संस्कार के माध्यम से बच्चे का शरीर सुडौल व निरोगी हो, इसके लिए प्रयत्न किए जाते हैं। सीमन्तोन्नयन संस्कार गर्भधारण के छठे से आठवें महीने तक किया जा सकता हैं। इस संस्कार के माध्यम से बच्चे की उत्कृष्ट मानसिकता के लिए प्रयत्न किया जाता हैं।

शैशव संस्कार

शैशव संस्कार के अन्तर्गत जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, मुंडन एवं कर्णवेध संस्कार आते हैं। शैशव संस्कार शिशु के उचित पालन–पोषण, स्वास्थ्य एवं शुद्धता से संबंधित हैं। इन संस्कारों में बच्चे के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए घर को एक संस्कृति पाठशाला के रूप में बदलने के लिए किस प्रकार के परिवर्तन आवश्यक है, इसके विषय में बताया जाता हैं। इन संस्कार कार्यक्रमों के माध्यम से परिवारजनों को शिशु के उचित देख–रेख और पालन–पोषण का प्रशिक्षण अनौपचारिक रूप से मिलता रहता था।

शैक्षिक संस्कार

शैक्षिक संस्कारों में विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त एवं समावर्तन संस्कार सम्मिलित हैं। इन संस्कारों का संबंध बालक–बालिकाओं की शिक्षा के औपचारिक और अनौपचारिक दोनों पक्षों से था। विद्यारम्भ संस्कार के बाद घर पर बालक–बालिकाओं की प्रारम्भिक शिक्षा शुरू होती थी। उपनयन एवं वेदारम्भ संस्कारों के पश्चात गुरुकुल में औपचारिक शिक्षा होती थी। जब विद्यार्थी गुरुकुल की शिक्षा पूरी कर लेते थे तो समावर्तन संस्कार होता था और इस संस्कार कार्यक्रम में गुरु विद्यार्थियों को दीक्षांत भाषण देते हुए कहते थे कि स्वाध्याय में कभी प्रमाद मत करना। इसका आशय है कि वैदिक काल में आजीवन स्वाध्याय द्वारा ज्ञानार्जन किया जाता था।

व्यस्क और उत्तर जीवन संस्कार

विवाह, वानप्रस्थ, संन्यास और अन्त्येष्टि संस्कार व्यस्क और उत्तर जीवन संस्कार के अन्तर्गत माने जाते हैं। इन संस्कारों ने मानव–समाज को सुसंगठित और विकसित बनाने में महत्त्ववपूर्ण योगदान दिया हैं। विवाह संस्कार यौन, पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं का ठीक से हल था। वानप्रस्थ और संन्यास संस्कार का संबंध ज्ञानार्जन और अपने अनुभवों को लोक कल्याण में लगाने से था। अन्त्येष्टि संस्कार का उद्देश्य स्वास्थ्य, स्वच्छता और परिवार के जीवित व्यक्तियों को सांत्वना देना था।

शोध का औचित्य

वर्तमान समय का शैक्षिक, सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक वातावरण व्यक्ति को दिन–प्रतिदिन मानवता से दूर ले जा रहा हैं। संस्कार तात्कालीन परिस्थितियों के अनुसार प्रस्तुत किए गए थे, उनकी सामाजिक मूल्यों के विकास में वर्तमान में प्रासंगिकता जानने के लिए यह अध्ययन किया गया।

समस्या कथन

''वैदिक संस्कार पद्धति में निहित सामाजिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता।''

शोध के उद्देश्य

1. मानव जीवन को पवित्र एवं मर्यादित बनाने में सोलह संस्कारों के योगदान का अध्ययन करना।
2. सामाजिक समस्याओं के समाधान में सोलह संस्कारों की उपयोगिता का अध्ययन करना।
3. सामाजिकता बढ़ाने, सामाजीकरण करने तथा आपस में सद्भाव बढ़ाने में सोलह संस्कारों की सार्थकता का अध्ययन करना।
4. मानव के नव निर्माण में सोलह संस्कारों की उपयोगिता का अध्ययन करना।
5. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वैदिक संस्कारों की सामाजिक मूल्यों के विकास में प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

शोध की कार्यप्रणाली

शोध कार्य में ऐतिहासिक एवं वर्णनात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया हैं। इसमें पुस्तकालय आँकड़ों का भी सहारा लिया गया हैं। वेबसाइट, पत्रिकाओं, पुस्तकों, जर्नल्स, शोध कार्यो, रिसर्च पेपर और कई प्रकाशकों के स्रोतों से महत्त्वपूर्ण डेटा एकत्र करने के बाद उचित निष्कर्षों तक पहुँचने और महत्त्वपूर्ण अंतदृष्टि तैयार करने के लिए जानकारी का समीक्षात्मक अध्ययन किया गया हैं।

सामाजिक मूल्य

सामाजिक मूल्य वे नैतिक सिद्धांत, मानक एवं विश्वास हैं, जो समाज में व्यवहार, संस्कृति तथा मानवीय रिश्तों को निर्धारित करते हैं। सामाजिक मूल्य सामाजिक जीवन से सम्बन्धित होते हैं, जो जीवन को उन्नत बनाते हैं, जैसे :– एकता, उत्तरदायित्व, सत्य, न्याय, समानता, सम्मान, दयालुता, सहनशीलता, सहयोग भावना, सतकर्म करना और धर्म का आचरण करना इत्यादी सामाजिक मूल्य हैं, जो व्यक्तिगत कल्याण एवं सामाजिक सौहार्द को बढ़ावा देते हैं।

संस्कार पद्धति में निहित सामाजिक मूल्य

समाज का प्रशिक्षण

मानव कल्याण की महान परम्पराओं में जितने भी आयोजन और अनुष्ठान हैं, उनमें सबसे बड़ी परम्परा संस्कार पर्वों की हैं। संस्कार आयोजनों द्वारा सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने और संस्कृति के प्रचार–प्रसार के लिए प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था की गई थी, जिससे संस्कार अनुष्ठानों द्वारा व्यक्ति, परिवार और समाज को प्रशिक्षिण होता रहता था।

सामाजिक एकीकरण में सहायक

संस्कार कार्यक्रम समाज के सदस्यों को सामाजिक व्यवहार के स्वीकृत क्रम के अनुरूप ढालते हैं। संस्कार आयोजन समय–समय पर प्रथाओं, रीति–रिवाजों, सामाजिक एवं सांस्कृतिक आदर्शों आदि से परिचय करवा कर सामाजिक व्यवस्था में संघर्ष को दूर कर संतुलन बनाए रखने में योगदान देते हैं, जो सामाजिक एकीकरण में सहायक हैं।

सामाजिक नियंत्रण

संस्कार आयोजनों में सामाजिक अन्तः क्रियाओं से व्यक्ति को समाज की सांस्कृतिक परस्पराओं, मान्यताओं, विश्वासों एवं रीति–रिवाजों के अनुकूल व्यवहार करने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था। इससे सामाजिक व्यवस्था का नियमन और नियंत्रण होता हैं। नियंत्रण के बिना जीवन–व्यवस्था एवं समाज व्यवस्था तहस–नहस हो जाएगी।

सामाजीकरण

संस्कार कार्यक्रमों से बच्चा अपने माता–पिता, संबंधियों एवं बुजुर्गों से व्यवहार करना सीखता हैं, यह प्रक्रिया बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक चलती रहती हैं। इस अभ्यास द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक नीति के प्रति दृढ़ता एवं आस्था उत्पन्न होती हैं। इसी के माध्यम से संस्कृति के अनुरूप व्यवहार करने का विवेक विकसित होता हैं और संस्कृति को आत्मसात करते हैं, जो सामाजीकरण का प्रमुख साधन हैं।

भेदभाव रहित समाज

कन्या सुपुत्रयोस्कुल्यं वात्सल्यं च भवेत्सदा।
तुल्यानन्दं विजानीयाद् दृयोर्मनसि प्राप्तयोः।।

अर्थात् ''सदैव कन्या और पुत्र दोनों पर समान वात्सल्य हों, दोनों की प्राप्ति से हृदय में समान प्रसन्नता का अनुभव करें।'' स्मृतियों में कहा गया हैं कि "मनुष्य जन्म से द्विज नहीं होता, द्विज तो वह संस्कार द्वारा बनता हैं।" वैदिक युग में जाति, वर्ण, लिंग आदि के आधार पर कोई भेदभाव नहीं था। वैदिक शिक्षा और संस्कार प्रक्रियाओं के माध्यम से मानव को भेदभाव से ऊपर उठकर मनुष्यों और जीवों के कल्याण की शिक्षा दी जाती थी।

आश्रम व्यवस्था और संस्कार

वर्णाश्रम व्यवस्था का व्यक्ति के कार्यों को समाज के हित को ध्यान में रख कर नियंत्रित करना मुख्य उद्देश्य था। इन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संस्कारों की स्थापना हुई। संस्कार पद्धति के द्वारा व्यक्ति संगठित एवं अनुशासित होकर एक–चरण से दूसरे चरण में प्रवेश करता था। आश्रम व्यवस्था के अन्तर्गत् व्यक्ति संस्कार अनुष्ठानों द्वारा अनुशासित तरीक से लक्ष्य की ओर अग्रसर होता हैं।

विवाह की आदर्श अवधारणा की शिक्षा

सामाजिक परम्परा निर्वाह करने की क्षमता और परिपक्वता आ जाने पर व्यक्ति का विवाह संस्कार कराया जाता हैं। इसके अन्तर्गत वर–वधू दोनों साथ रहकर धर्म पालन का संकल्प लेते हुए विवाह करते हैं। विवाह संस्कार के अन्तर्गत सन्तानोत्पादन से लेकर सन्तान के पालन–पोषण और आत्मनिर्भर होने तक के दायित्व का निर्वाह शामिल हैं। विवाह संस्कार के समय पति–पत्नी द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं को ठीक तरह से समझा–समझाया जाए, तो उनका संबंध घनिष्ठ बनता हैं।

संयुक्त परिवार व्यवस्था बनाए रखने में सहायक

वैदिक संस्कारों के आयोजनों में एक–दूसरे की भावनाओं और विचारों को समझने का अवसर मिलता हैं। इन कार्यक्रमों की व्यवस्था सभी सामूहिक रूप से मिलकर करते हैं। इनके माध्यम से व्यक्ति शिष्टाचार, तहजीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएं, रीति–रिवाज इत्यादि सीखता हैं, जिससे उनमें सहयोग, सहानुभूति, समुदायिक जुडाव, भावात्मक दृष्टि से मजबूती जैसे गुणों का विकास होता हैं, ये सभी गुण संयुक्त परिवार व्यवस्था को बनाए रखने में सहायक हैं।

स्वस्थ मनोरंजन

वैदिक संस्कार आयोजनों में भी संगीत, नृत्य, घर में चित्रकारी से सजावट और वादन इत्यादि का आयोजन किया जाता हैं, जिसमें सभी परिवार के सदस्य, मित्रगण, रिश्तेदार इत्यादि सामूहिक रूप से भाग लेते हैं, जिससे उनका मनोरंजन होता हैं। मन–मस्तिष्क को श्रेष्ठ चिन्तन में लगाए रखने और विकृत चिन्तन से बचाव के लिए, वैदिक संस्कार स्वस्थ मनोरंजन प्रदान करने के लिए आज भी प्रासंगिक हैं।

निष्कर्ष

वैदिक संस्कारों का सामाजिक दृष्टि से महत्त्व हैं। प्रत्येक समाज अपने मूल्यों और विश्वासों को संरक्षित करने के लिए उनके प्रति विश्वास एवं निष्ठा की भावना जागृत करता हैं, जिसके लिए धार्मिक प्रेरणा तथा अनुशासन की आवश्कता होती हैं। संस्कार धार्मिक प्रेरणा तथा अनुशासन के उत्कृष्ट माध्यम हैं। संस्कार आयोजन सामाजिक एकीकरण, सामाजिक प्रशिक्षण, सामाजिक नियंत्रण, सामाजीकरण, विवाह की आदर्श अवधारणा की शिक्षा, पारिवारिक सामंजस्य बनाए रखना, आश्रम व्यवस्था के संचालन और स्वस्थ मनोरंजन का कार्य करते हैं। विधि और संविधान द्वारा स्थापित कोई भी सामाजिक व्यवस्था तब तक स्थाई नहीं हो सकती, जब तक उसकी जड़ सामाजिक मन से नहीं जुड़ती। संस्कार प्रक्रिया के द्वारा व्यक्ति अपने को सामाजिक धारणाओं और मूल्यों के अनुरूप बना लेता हैं। प्रत्येक संस्कार कार्यक्रम में नई सीख, समझ और भावी जीवन के लिए शिक्षा अवश्य मिलती हैं। आधुनिक परिवेश में जहाँ दिन–प्रतिदिन असामाजिक व्यवहारों, निन्दनीय आचरणों और अनेक दुष्प्रवृत्तियों का बोलबाला हैं, इस परिस्थिति में समाज में स्थिरता, विश्वास एवं बेहतर संबेधों को बढ़ावा देने के लिए संस्कारों में निहित सामाजिक मूल्य आज भी प्रासंगिक हैं।

संदर्भ सूची

1. वामन शिवराम आम्टे, संस्कृत–हिन्दी शब्दकोश, पृ. 1083।
2. पाण्डेय, डॉ. राजबली (1957) 'हिन्दू संस्कारः हिन्दू संस्कारों का सामाजिक–धार्मिक अध्ययन', वाराणसी : चौखम्बा विद्याभवन।
3. बहल, पं. शशिमोहन (2020) 'क्या हैं सोलह संस्कार' हरिद्वार (उत्तराखंड) : रणधीर पब्लिकेशन।
4. पारडी (1957) 'ऋग्वेद', सूरत।
5. श्रीमाली, पं. राधाकृष्ण (1995) 'अथर्ववेद', नई दिल्ली।
6. देवराज, नन्द किशोर (1999) 'भारतीय दर्शन', लखनऊ : उ. प्र. हिन्दी संस्थान।
7. मिश्र, राजदेव (2002) 'मनुस्मृति', चौक फैजाबाद : घनश्यामदास एण्ड सन्स।
8. शास्त्री, डॉ. रामचन्द्र वर्मा (2007) 'मनुस्मृति', नई दिल्ली : विद्या विहार।
9. त्रिपाठी, रूपनारायण और साहू, रामदेव (2001) 'भारतीय संस्कृति', जयपुर : श्याम प्रकाशन।
10. द्विवेदी, डॉ. कपिलदेव (2018) 'वैदिक साहित्य एवं संस्कृति', ज्ञानपुर (भदौही) : विश्व भारती अनुसंधान परिषद।
11. शर्मा, पं श्रीराम (2005) 'षोडश संस्कार विवेचन', मथुरा : अखण्ड ज्योति संस्थान।
12. शुक्ल, डॉ. सच्चिदानंद (2016) 'हिंदू धर्म के सोलह संस्कार', नई दिल्ली : प्रभात प्रकाशन।
13. सहाय, डॉ. शिवस्वरूप (1998), 'प्रारम्भिक भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास', नई दिल्ली : मोतिलाल बनारसीदास पब्लिकेशन हाऊस।
14. पाण्डे, गोविन्द चन्द्र, ''मूल्य मीमांसा'' राका प्रकाशन, मोती लाल नेहरू रोड़, इलाहबाद, 2005।
15. पाण्डेय, डॉ. रामशकल, ''मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य'', आर. लाल बुक डिपो मेरठ, हिन्दी संस्करण–2018।
16. द्विवेदी, डॉ. कपिलदेव (2004) 'वेदों में विज्ञान', ज्ञानपुर (भदौही) : विश्व भारती अनुसंधान परिषद।
17. प्रभु, डॉ. पी.एन. (2014) 'हिन्दू सोशल ऑर्गनाईजेशन' ISBN:978-936042231।
18. लाल, बसन्त कुमार (2005) 'समकालीन पाश्चात्य दर्शन', दिल्ली : मोतीलाल बनारसी दास।
19. बंसत, सुजित कुमार, रंजन विकास चन्द्र, 'भारतीय समाज में परिवर्तन और विकास'।